

# SUBJECT : GEOGRAPHY

CLASS : B.A. Part I<sup>st</sup> (Hons.), PAPER : I<sup>st</sup>, UNIT : III<sup>rd</sup>.

TOPIC : KARST TOPOGRAPHY

BY :- Dr. Sanjay Kumar, Assistant Professor, Dept. of Geography,  
D. B. College, Jaynagar, Madhubani, L.N.M.U. Darbhanga.

LECTURE No. : 10 (Email - sanjaykumar.phd@gmail.com)

कार्स्ट स्थलाकृतियाँ आमतौर पर : धुलनशील चट्टानों वाले क्षेत्रों में जल की क्रिया द्वारा बनी स्थलाकृतियाँ हैं। इनका नामकरण यूगोस्लाविया के कार्स्ट प्रदेश के आधार पर हुआ है जहाँ ये स्थलरूप बहुतायत से पाए जाते हैं। भारत में ऐसी स्थलाकृतियाँ शिवाँ के पठार और चित्रकूट के पास पायी जाती हैं। चूना-पत्थर के क्षेत्रों में जल की क्रिया के कारण कार्स्ट स्थलाकृतियों का निर्माण होता है।

चूना पत्थर या डोलोमाइट के क्षेत्रों में भूमिगत जल सतह के ऊपर या नीचे विलयन क्रिया द्वारा विशिष्ट स्थलाकृतियों का निर्माण करती है, जिसे कार्स्ट स्थलाकृति कहते हैं।

भौगोलिक अवस्थिति के आधार पर स्थलाकृतियों का वर्गीकरण -

- सतह पर विकसित स्थलाकृतियाँ (Surface Topography)
- धोल शंख एवं सम्बन्धित स्थलाकृतियाँ (Sink Hole and Related Topography)
- गुफा एवं सम्बन्धित स्थलाकृतियाँ (Cave and related Topography)

→ सतह पर विकसित स्थलाकृतियाँ -

- टेरा रोसा - यह एक प्रकार की मृदा है। चूने की सतह पर जल के रिसकर भूमिगत होने से धुलन क्रिया द्वारा लाल तथा मृत्तिका युक्त मिट्टियों के अवशेष छुट जाते हैं, इसे टेरा-रोसा कहते हैं। इसका विकास चूने के अनुपात में कमी रहने वाले क्षेत्रों में होता है।
- लैपीज - विषम संरचना वाले शैल प्रदेशों में धुलनशीलता के फलस्वरूप सतह अत्यधिक ऊँच-छाँच तथा असमान हो जाती है। तै. प्राप्त संरचना को लैपीज कहते हैं। उदा० - क्लिण्ट (इंग्लैण्ड), लैपीज (फ्रांस), कारेन (जर्मनी)।
- विलयन खाड़ी - इसका विकास जैसे प्रदेशों में होता है जहाँ चट्टानों के खोले एवं मुलायम अवस्था में क्रमशः पायी जाती है और क्षैतिज रूप में होती है। मिसौरी, एण्डियाना (U.S.A) में देखने को मिलते हैं।

## → धोल रन्ध्र एवं सम्बन्धित स्थलाकृतियाँ —

- 1) धोलरन्ध्र (Sink Hole) — जब चूना पत्थर की चट्टानी प्रदेश में सन्धियों का विकास होता है तो वर्षा का जल सन्धि के सहारे रिसने लगता है, जिससे विलयन क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। इस स्थिति में सर्वप्रथम सतह पर ही कीपाकार स्थलाकृति विकसित होती है, जिसे धोलरन्ध्र कहते हैं। यह एक छोटा गर्त होता है जिसकी गहराई अधिक से अधिक 10 मी. तक होती है।
- 2) डोलाइन (Doline) — धोलरन्ध्र का विकास होने से इसका निर्माण होता है। इनकी गहराई 10m से कुछ ज्यादा तथा ढाल 2 से 25 m तक हो जाता है।
- 3) गुवाला (Uvala) — एक से अधिक डोलाइनों के मिलने से गुवाला का निर्माण होता है। इनका व्यास 1k.m. तक हो सकता है। गुवाला स्थायी झील का निर्माण करता है।
- 4) पोलजे (Polje) — कई गुवाला के मिलने से इसका निर्माण होता है। एड्रियाटिक सागर के तटवर्ती प्रदेशों में ऐसी झीले प्रमुखता से पाई जाती हैं।
- 5) विलयन रन्ध्र (Solution Hole) — जब सन्धि के सहारे विलयन तेजी से होता है। इससे धोलरन्ध्र का परिवर्तन विलयन रन्ध्र में हो जाता है, यह लगभग बेलनाकार होता है।
- 6) अन्धी घाटी (Blind Valley) — सतह पर विलयन रन्ध्र के उपस्थित रहने के कारण नदी इसमें से होती हुई भूमिगत हो जाती है तथा विलयन रन्ध्र के आगे का भाग शुष्क रह जाता है, और घाटी का वही अन्त हो जाता है।